वेदों की खुशबू

ओ३म्

वेद सब के लिए

(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

# VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

| Monthly Magazine | Issue 84 | Year 9 | Volume 9 | Jul 2019 Chandigarh | Page 24 | मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 150 |
|---|---|---|---|---|---|---|

विचार

## महात्मा गांधीं की निम्न बातें हर किसी का मार्ग दर्शन कर सकती है।

महात्मा गांधी के साथ उनकी राजनैतिक नितीयों और विचारधारा के बारें में तो भिन्नता हो सकती है, और शायद प्रासंगिक न भी रहें परन्तु उनके द्वारा कही निम्न बातें किसी भी व्यक्ति, समाज और देश के लिये सदैव प्रासगिंक रहेंगी व मशाल का काम कर सकती है।

1 श्रम किये बगैर समृद्दि विकृति है।

2 विवेकरहित आन्नद विकृति है।

3 चरित्र बिना ज्ञान विकृति है।

4 मूल्यरहित व्यापार विकृति है।

5 संवेदनाशून्य विज्ञान विकृति है।

6 सिद्वान्तरहित राजनिती विकृति है।

7 संमति का टरस्टी बने न कि मालिक

8 सत्य को सर्वोपरी मानें।

9 आपकी अपनी व अपने आसपास की स्वच्छता आपकी निजी जिम्मेवारी है।

10 आत्म निरिक्षण, आत्मचिन्तन, आत्मनिरंत्रण व कर्म से पीछे न हटना आपको अन्दर की स्वष्छता की और ले जाता है।

11 जो भी करें पहले देखें की सबसे गरीब और कमजोर व्यक्ति पर उसकर क्या असर हो रहा हे।

**Contact:**
**BHARTENDU SOOD**
**Editor, Publisher & Printer**
**# 231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047**
**Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,**
**E-mail : bhartsood@yahoo.co.in**

# हिरण्यमयेनप पात्रेण सत्यस्यापितमं मुख्यम तत्व पूषन्नपावृणु सत्यथमार्य दृष्टये

उस परम स्त्य ब्रहम के दर्शन तभी होंगे जब कि व्यक्ति की आंखों के आगे से धन दौलत का संसारिक सुवर्णमय आवरण हट जायेगा। हम माया के इस आवरण को हटा नहीं पाते इसलिये परम सत्य ब्रहम के दर्शन नहीं कर पाते हैं जो कि मानव जीवन का लक्ष्य है।

कहते हैं कि एक बार संत रविदास जी की कुटिया में एक साधु आये। संत रविदास स्वभाव से ही बहुत सेवाभाव वाले थे। हुदय में उनें ईश्वर का बास था और कर्मेंदियां सेवा भाव में ही रहती थी। साधु संत रविदास की सेवा से बहुत प्रसनन था । विदा लेने से पहले साधु ने संत जी को पारसमणी भेंट की तो संत रविदास ने विनम्रता से लेने से ईकार कर दिया। उनका कहना था कि उन्हु तो सब से बड़ा ईश धन मिला हुआ है, वे इस मणी को लेकर क्या करेंगे। ज बवह नहीं माने तो साधु उस पारसमणि को जहां उनका सामान पड़ा रहता था वहीं रख कर चला गया। कुछ दिनों बाद वही साधु संत रविदास के पास फिर से आया। संत जी उसी तरह अपने जूते ठीक करने के काम में लगे हुये थे। साधु हैरान था, उसने संत जी से पूछा-------जो मैं पारसमणी छ़ोड़ गया था, क्या उसका प्रयोग नहीं किया? सुत जी हंस दिये और बोले ------मैने आपको पहले भी कहा था कि पारसमणी मेरे किसी काम की नहीं, आप किसी लरूरतमन्द को दे दें। साधु हैरान था कि उसने जहां वह मणी रखी थी वहीं पड़ी हुई थी। संत रविदास ने उसे छुआ तक नहीं था। उसी लिये कहा है ------ उस को ही परम सत्य ब्रहम के दर्शन तभी होंगे जिस व्यक्ति की आंखों के आगे से धन दौलत का संसारिक सुवर्णमय आवरण हट गया है।

इसी तरह महर्षि दयान्नद सरस्वती के जीवन में बहुत से अवसर आये जब कि उन्हे धन वाले व्यक्तियों ने पैसे से महनत के ओहदे से मालोमाल करने की बात की परन्तु ं महर्षि दयान्नद सरस्वती ने वह वब ठुकराकर उनहें हैरान कर दिया, कारण जिसे ईश धन मिला हो उसे इस संसारिक धन की आवश्यकता नहीं रहती। और जब तक मन इस सांरिक धन को पाने की होड़ में लगा है तो ईश धन नहीं मिलता।

भगवान के ऐश्वर्य की चोटी किन्हें प्राप्त होती है, उनका ऐश्वर्य पूर्णरूप से किन्हें प्राप्त होता है? उनको जो भगवान से कह सकते हैं कि 'ते वयम्'– हम आपके हैं। जिनकी चित्तवृत्ति सदा भगवान में लगी रहती है, जो सदा भगवान को स्मरण रखते हैं, भगवान का रूप जिनके मन की आँखों के आगे सदा रहता है, इसलिए हम जो भगवान के गुणों से आकृष्ट होकर उन्हें अपने चरित्र में धारण करते रहते हैं और इस प्रकार जो भगवान के अपने बन जाते हैं उन्हें भगवान का ऐश्वर्य पूर्णरूप से प्राप्त होता है हमें जो बहुत बार दुःख में दब जाना पड़ता है, हमसे जो सुख–आनन्द बहुत बार दूर भाग गया–सा दीख पड़ता है, उसका कारण यह होता है कि हम प्रभु के नहीं रहते, हम प्रभु से दूर चले जाते हैं, हमारा चरित्र प्रभु के गुणों से विरहित होकर पापमय बन जाता है। जब तक हम प्रभु के रहते हैं, प्रभु के सत्य, न्याय, दया, ज्ञान, बल आदि गुणों का समावेश तब तक हममें रहता है तब तक हमें प्रभु का ऐश्वर्य निरन्तर प्राप्त होता रहता है। ज्यों–ज्यों हम प्रभु से परे हटते जाते हैं, त्यों–त्यों हमसे ऐश्वर्य छिनने लगता है और हमारा दुःख–संकट बढ़ जाता है

# *Live, love and let it be*

Bhartendu Sood

THERE is a story by Tolstoy. A priest would go place to place with his team, preaching his religion. During one of his sea voyages, they spotted a small island with a small population. The priest asked the inhabitants if they prayed to God. Their answer was, “When we need something, we raise our hands towards the sky and make supplication.”

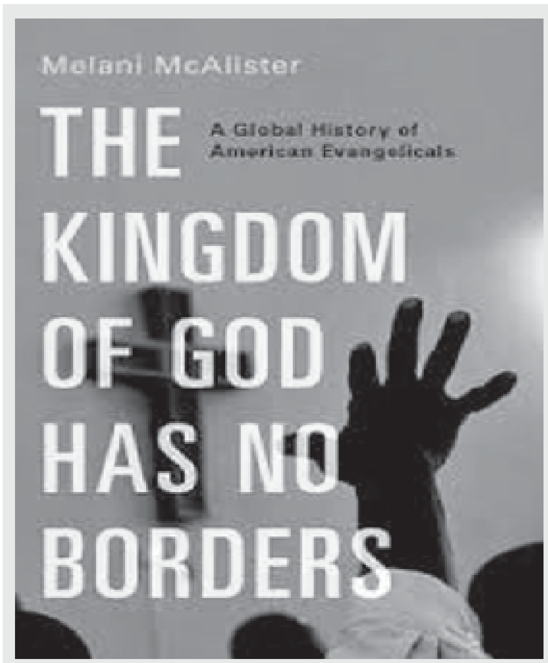


“Oh, you need to be told how to pray,” said the priest. He stayed there for a fortnight and taught them how to pray. Then, the priest and his team departed for their onward voyage. Hardly had their ship moved a few miles, when they saw three men coming towards them, running on the water. Surprised, the priest stopped the ship and asked them what had happened. They replied apologetically, “Holy man, we forgot the prayer you had taught us, teach us again.” Still in awe, the priest said, “Surely, first tell me how you were running on water?”

“Holy man, if you remember, we had told you that whenever we needed something, we raised our hands and asked for wishes and they were granted. We wanted to reach you so we raised our hands and said, 'We want to meet the priest but we don't have any boat. Please help us.' An inner voice said, 'You walk.' This is how we reached you.”

Aghast and bewildered, the priest said, “You continue to pray as you were doing earlier, you don't need my guidance and method of prayer.”

This world, with an 800 crore population, has more than 192 countries and many islands. Everywhere people accept God in their own way and even if they don't believe in Him, they consider goodness as God. This I learnt during my visit to communist countries. They eat, drink and wear what the climatic and geographical conditions permit. They have kept God above these mundane things. To think that my God, my religion, my language or my eating habits are the best, smacks of ungodly qualities. And to force these on others is a violence of thoughts, which is worse than physical violence. A man born near the coast takes to fish not by choice, but it comes naturally to him. Likewise, on high altitudes, where it snows most of the year, people's life depends upon yak. How can we expect them to sing a paean to a cow?

So, at a time when airplanes have dramatically expanded our access to the world and the Internet and mobiles have leapfrogged communication and the social matrix, we need to consider ourselves as members of the global family. For the sake of harmony and love, we must respect others spiritual beliefs, eating habits and language, as we often do at home when children grow up. Nowhere does this lesson merit greater importance than in India, whose main character is diversity.

✪✫✪

# पत्रिका के लिये शुल्क

**सालाना शुल्क 150 रूपये है, शुल्क कैसे दें**

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दे
2. **आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–**
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFC Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFC Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFC Code - PSIB0000242**
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।

**यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया at par का चैक भेज दे।**

# आईये इस विश्व के नागरिक कहलायें

आज विज्ञान ने इतने बड़े संसार को एक एक गांव का रूप दे दिया हैं। इंटरनैट, टैलीफोनने हमें एक दूसरे के उतना ही नजदीक ला दिया है जितना कि पुराने समय में एक गांव में रहने वाले व्यक्ति महसूस करते थे। पर इस सब के बाबजूद कभी मानव इतना अकेला महसूस नहीं करता था जितना कि अब करता है। इसका कारण यह है कि वह अपने में ही इतना व्यसत है कि उसे दूसरे के बारे में जानने का समय ही नहीं हैं और न ही वह जानने की आवश्यकता महसूस करता है। आप अपने ही शहर में अगर किसी से दो घर दोड़कर रह रहे परिवार के बारे में पूछोंगे तो जयादा स्म्भावना यही है है कि आपको सूनने में मिले————————हां एक परिवार रहता तो है पर हमें उनें बारे में अधिक जानकारी नहीं। यही नहीं किसी बृद्ध व्यक्ति को मिलिये जो कि अच्छे पद से सेवा निवृत हुआ है, अच्छी पैंशन लेता है, उसकी कोई ऐसी जिम्मेवारी भी नहीं जिसके लिये वह चिन्तित हो फिर भी उसके चेहरे पर खुशी या सन्तोष के स्थान पर निराशा नजर आयेगी मानों उसके साथ कोई धोखा या छलकपट हुआ है। वह अपने आपको सब के होते हुये भी बहुत अकेला पाता है। हमारे शास्त्रों में कहा है कि मनुष्य की योनी बहुत अच्छे कर्मो की ही फल होता है। यानी कि यह मानव शरीर बहुत मुश्किल से मिलता है। एक व्यक्ति ने बहुत ठीक कहा————हमने अपने विवेके और मूल्यों को गिरवी रखकर भौतिक उन्नति प्राप्त की है, आत्मा का हनन कर हम ताकत को एकत्रित रहें हैं। श्शान्ति पर्व के स्थान पर, युद्धों को याद कर पर्व मनाते है, हमने कितनों को जीवन दिया उसके स्थान पर यह याद रखते हैं कितनों को मारा।

ऐसी मानसिकता तभी ठीक हो सकता है जब कि हम अपने को दूसरों से अलग न मानकर दूसरों में ही एक मान कर चलें। आप यह इन्तजार न करें कि कोइ आपका हाल पूछने आये। आप पहल कर दूसरों का हाल पूछे। रोज मिलते हैं और यह भी जानते हैं कि यह ब्यकित मेरे घर के नजदीक ही रहता है पर जैसे ही एक दूसरे के पास पहुचते हैं तो अपना मुंह फेर लेते हैं। और कुछ नजारा यह भी होता है कि दो अनजाने व्यक्ति मिले एक दूसरे को देख कर मुस्करा दिये, एक दूसरे के बारे में पूछा और मित्र बन गये। मैं इतना ही बता सकता हूं, अपने जानकारों से ही मुंह फेरने वालों से कही अधिक दूसरों के साथ जीवन जीने वालों में कहीं अधिक जीने की उमंग, उत्साह और ,खुशी नजर आयेगी। वेद में मित्रास्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजु. 36/18 कहकर हम सभी को परस्पर एक दूसरे को मित्रा

की दृष्टि से देखने का आदेश दिया और मित्रता का भाव रखने के लिए परस्पर प्रेम अनिवार्य शर्त है । मन, वचन, कर्म से सर्वदा सर्वथा किसी भी प्राणी के प्रति वैर की भावना न रखना और उसके हित का सोचना ही प्रेम और मित्रता है।। इसे जीवन मे लाने का सरल उपाय है कि हम जीवन में जैसे व्यवहार की अपेक्षा दूसरों से अपने लिए करते हैं वैसा व्यवहार स्वयं दूसरों से किया करें । यदि ऐसा कर पायेंगे तो निश्चित रूप से सबसे प्रेम बढ़ेगा और मित्रता बढ़ेगी । प्रेम की भावना का प्रारम्भ घर से करें माता–पिता, भाई–बहन, बन्धु–बान्धव सभी रिश्तों को प्रेम भाव से सिंचित कर मजबूत बनायें फिर इस इकाई को दृढ़ करते हुए पड़ौसी समाज देश और राष्ट्र से प्रेम करें और इसकी परिधि को बढ़ाते हुए संसार के प्राणिमात्रा से प्रेम करें और इस प्रेम की पराकाष्ठा इस संसार के रचयिता नियामक ईश्वर से सम्पूर्ण समर्पण भाव से प्रेम करें । हमारे शास्त्र सारे विश्व को एक परिवार समझ कर सब के सुख की कामना काने की बात करते है।

अथर्व वेद में कहा है

1. सहृदय सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः अन्योः अन्यमसि हर्यत वत्सं
   जातमिवाघ्न्या।। अथर्व 3.30.01

   तुम्हारे हृदय में सामनस्व हो, मन द्वेष रहित हो, एकीभाव हो. परस्पर स्नेह करो
   जैसे गौ अपने नवजात बछड़े से करती है.

✪☆✪

**पत्रिका में दिये गये विचारो के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार है। लेखको के टेलीफोन न. दिए गए है न्यायिक मामलो के लिए चण्डीगढ़ के न्यायलय मानय है।**

**Publisher & Printer** Bhartendu Sood **Printed at** Umang Printer, Plot No. 26/3, Ind. Area, Phase-II, Chd. 9815628590
**Owner** Bhartendu Sood **Place of Publication** # 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047
**Phone :** 0172-2662870 (M) 9217970381 Name of Editor : Bhartendu Sood

**अगर आपको कुछ कहना है या पत्रिका subscribe करनी है**
**कृप्या निम्न address पर सर्म्पक करें**
**भारतेन्दु सूद, 231 सैक्टर– 45-ए चण्डीगढ़.160047**
**0172.2662870, 9217970381,** E mail : bhartsood@yahoo.co.in

# God is not for sale

*Kailash Aggarwal*

God is not for sale. People try to sell the name of God in various ways. There are people who ask money for God-realisation and that's really funny. There is no 'paid' spirituality, it is only greed. There is no need to renounce anything for spirituality. Renouncing must happen naturally. Renunciation is basically non-attachment with your belongings.

One should approach God with love, not with greed to fulfil desires. It

does not mean that we should not have any desire to do our duties, which is our dharma towards our family and work. You should perform all your duties in Divine consciousness and submit the result of karma to God. What we do and think repetitively, if we do not offer to God, then it forms an impression. Slowly it hardens and permeates our subconscious and settles down in our causal body, Atman. The same seed we carry with our atman, called samskara, we carry it forward life after life.

Every day, we should offer a prayer to God, asking for making the quality of karmas good which means that give happiness to you as well as others and that is possible only when our thoughts are noble and it happens when you try to be god like by embracing godly qualities.

We always talk about our actions and their results, but forget about our inactions. If you are not fully prepared for your exams, then your inaction will haunt you even in your dreams. So the inaction towards your studies troubles you. The consequences of inaction are more painful than performing action. These impressions form by inaction, because you deliberately did not do something. When we deliberately do or don't do anything then we have different levels of samskara. When I do something casually, I can erase it through yogic practices, but when knowingly or deliberately I do something, it is not easily erased

Today's young generation needs

wise direction, and in order to inculcate any action, the heart has to be purified first to give correct signals to the mind. Sometimes you feel that this is the right thing to do, but you don't have the courage to do it. Through Heartfulness Meditation, you receive wisdom to do the right thing, and also inner courage to follow your heart's feelings. Your brain follows only heart signals. Once we correct the heart, everything gets corrected automatically.

Patanjali describes the fundamental requirements for a spiritual seeker — viveka, power to discriminate between right or wrong, between cause and effect. This viveka comes from the heart only. Sahaj Samadhi has four levels of consciousness — waking, dreaming, dreamless sleep and turiya state. The beauty of the turiya state is that you are in a sleep-like state but yet fully awake. You are relaxed, poised, at peace and you are fully aware of what is happening around you. In this state, the mind has merged with its source, the heart, although some thoughts and senses are still somewhat active.

When Most spiritual masters talk about living in the moment — how can this be achieved? When you always follow your heart, you will be in the now. If you practise the heartful way of meditation, you can be here in your heart and at the same moment, you can do so many things. For instance, a child learning to ride a bicycle, starts with a four-wheel cycle, and slowly tries to master the art of riding. Then, after sufficient practice, he will ride it with two wheels. Initially, you have to support him, but after some days of practise, he becomes perfect and starts taking the bicycle to school and market without any support and guidance. Although riding is not his main activity as he may sing and also observe things around while cycling. Now he is not conscious of his bicycle, now it has become his second nature. If a child can be trained, why not an adult be trained to paddle heart-consciousness, and do things with heartful feelings all the time? You can be busy with what you are doing and at the same time, connect with the inner Self.

The state of being enlightened is when you become one with the Divine. When there is some discrimination between devotee and deity, between a water drop and the ocean, then there is a sense of separateness. When a raindrop falls into the ocean, is there a water drop left to speak about its nature and how it feels to become the ocean? Similarly, when a devotee merges in a deity, there is no devotee left to talk about it, but he is retained at some level to teach others. You feel the nectar or bliss in yourself all the time.

# कर्ज चिंता का मूल है तो चिंता ले जाती है चिता की और

भारतेन्दु सूद

इस का उदाहरण है अरबपति कैफे डे के मालिक सिद्धार्थ द्वारा आत्महत्या करने की घटना।

कैफे डे को शायद हर कोई जानता है। महंगी स्वादिष्ट काफी कुछ चुनन्दा लोगों के बीच बैठ कर उस का स्वाद लेने के लिये कभी न कभी हर शहर वासी शायद कैफे डे के काउंटर में अवश्य गया होगा।भारत के न केवल हर शहर में इस के शानदार कांउटर है, बल्कि विदेशों में भी है। कुल संख्या 1900 के करीब बताई जाती है। इन सब को शुरू करने वाले और चलाने वाले थे सिद्धार्थ, जिन को कि काफी किंग भी कहा जाता था। मजे की बात यह है कि इनका परिवार 140 वर्ष से काफी उगाने का ही काम कर रहा था और उनके चिकमंगलूर र्कनाटक, काफी के बहुत बड़े बड़े बगान है।

मैने उनका जीवन पढ़ा व बहुत प्रभावित हुआ। उनमें आगे बढ़ने की एक ललक थी। अपनी र्जमन यात्रा के दौरान उन्होने र्जमन में काम कर रही काफी चेन को देखा और मन बना लिया कि ऐसी ही काफी चेन वे भारत में भी बनायेंगे। और 10 सालों में ही कैफे डे जैसी कमपनी बना दी जिसके 1839 रैस्तरां हर शहर में है और विदेशों में भी है। यही नहीं वह इन्वैस्टमैंट बैंकर बनना चाहते थे, उस में भी नाम बनाया, ।अभी हाल में माइ्डं टरीडपदक जतमम नाम की कम्पनी में उन्होने कर्ज चुकता करने के लिये आनी हिस्सेदारी 3200 करोड़ रूप्ये में बेची। वह मलाया की तरह भाग नहीं गया बल्कि वह 3200 करोड़ उसने कर्ज चुकता करने में ही लगाया ।

प्रश्न उठता है कि ऐसा व्यक्ति आत्महत्या जैसा कदम क्यों उठाये? उसका मुझे एक ही कारण लगा वह है, कर्जा लेने की आदत और आसानी से मिलने वाला कर्जा। शायद आपको मालुम न हो भारत के बैंको में ऐसी प्रथा बन गई थी कि नामी व्यक्ति को बिन मांगे भी कर्जा दिया जाता था और जरूरतमंद छोटे व्यक्ति को कपड़े उतरवाकर भी बहुत मुश्किल से उसकी सारी सम्पति गिरवी रखकर उसकी जरूरत का बहुत थोड़ा हिस्सा दिया जाता है। आज हमारे बैंक भी जो आर्थिक संगट में हैं वे इसी का शिकार है। सिद्धार्थ बहुत योग्य व्यक्ति थे उनके पास आगे बड़ने की योजनायें थी, उस की पूर्ती के लिये हर कोई उनको उधार बिन मांगे भी देता रहा। परन्तु हर योजना पनपती नहीं, कई जगह साथ में काम करने वाले ठीक नहीं होते। हम हर जगह सफल नहीं होते। यही सब कुछ सिद्धार्थ के साथ भी हुआ।

यदि हम इस सारी घटना का अन्वेशन करें तो ऐसा लगेगा कि जो सिद्धार्थ की कर्ज के कारण हालत थी वही आजकल बहुतों की है फर्क यह है कि खुदकुशी जैसा कदम हजारों में एक ही उठाता है। यह कर्ज

लेने की संस्कृति पहले भी थी परन्तु बहुत तब और अव में बड़ा फर्क है। पहले छोटा आदमी, साहुकारों से अपनी जरूरत के कारण कर्ज लेता था। जरूरत ऐसी होती थी कि जिसका जीवन से सीधा सम्बन्ध होता था, जैसे फसल नहीं हुई, बेटी की शादी करनी है, कर्ज लेने वाला कर्ज देने वाले के नीचे दब कर रहता था। समाज में कर्ज देने वाले की इज्जत थी और कर्ज लेने वाले को इज्जत से नहीं देखा जाता था यहां तक कि अक्सर अपमान भी सहन करना पढ़ता था। परन्तु पिछले 50 वर्ष में सब कुछ बदल गया। अब कर्ज लेना शर्म की बात नहीं है, कर्ज लेने के लिये आपको प्रोत्साहित किया जाता है, अगर आदमी कर्ज नहीं लेगा तो इतने बैंक और फिनांस कम्पनियां कैसे चलेंगी, लाखों नोकरियां इस पर चल रही है।। कर्ज देने वाला आपके घर आता है––––अरे भाई साहब अभी तक स्कूटर पर ही घूम रहें हा, हम आपको पैसा देंगे बढ़िया सी कार लो। और देखते ही देखते पांच हजार की मंथली किस्त और तीन हजार कर पैर्टोल का खर्चा शुरू हो गया। इस में बुराई नहीं यदि कार आपकी आवश्यकता है और आप कर्ज बापिस करने के सक्षम हैं। परन्तु इतनी समझ हर ऐक में नहीं हाती। अधिक कर्ज आज आवश्यकता के लिये नहीं परन्तु दिखावे की वस्तुये खरीदने के लिये लिये लेते है। या फिर अनुभव की कमी के कारण आवश्यकता से अधिक आशावादी होकर लिये जातें हैं। यह भी सत्य है कि व्यापार में हर बात आपके बस में नहीं, उदाहरण के लिये यदि आयात शुलक कम कर दिया जाता है जिस कारण विदश से आने वाला माल कम भाव पर उपलब्ध हो रहा है तो आपका माल कोन खरीदेगा और आप बैंक से लिया कर्जा कैसे बापिस करेंगे। परन्तु ऐसे कारण कम होते हैं, अधिक तो दिखावें की चीजों के लियेख धूम धडक्के की शादी करने में बच्चों को विदेशों में भेजने के लिये कर्ज में लिया धन खर्चा कर देते हैं, और बाद में कर्ज चुकता करना मुश्किल हो जाता है।

कुछ भी कहें कर्ज न चुकाने की स्थिती में मानसिक दवाव तो होता ही है। इसे आप किस हद तक बरदसशत कर सकते हैं, यह आपकी मानसिक स्थिती पर निर्भ करता है। कुछ बिमारियों के शिकार भी हो जातें हैं। मैं तो यही सोचता हूं जब तक हो सके कर्ज से बचें। खास कर बच्चों के ऐशों आराम के लिये कर्ज न लें। बच्चे को कार चाहिये, फलैट लेना है तो खुद व्यवस्था करे पर आप कर्ज क्यों लें। शादियों के लिये भी कर्ज लेना ठीक नहीं। जिनना आप के पास है उसी में करें। कारण कर्ज की चिंता बहुत बुरी चीज है, आदमी आत्महत्या न भी करे परन्तु एक स्थिती ऐसा आ सकती है जब आप कर्जा चुकाने में अस्मर्थ महसेस करते हैं और कोई आप की सहायता नहीं करता यहां तक कि वे भी जिनके सुख के लिये आप ने कर्ज लिया था। आप असहाय महसूस कीते हैं और आप में हीन भावना आ जाती है, यही हीन भावना कई बार आत्महतया का कारण बन जाती है।

# धर्म नहीं, अधर्म व पाखंड हैं जीवन को कष्ट प्रद बनाने वाले अनुष्ठान

सीता राम गुप्ता

रविदास कहते हैं, ''मन चंगा तो कठौती में गंगा। प्रभुजी, तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग–अंग बास समानी।'' रविदास हों, कबीर हों, नानकदेव हों, तिरुवल्लुवर हों, हमारे सभी संत–महात्मा हमेशा धर्म के वास्तविक स्वरूप को समझने और उसका पालन करने पर ज़ोर देते रहे हैं। सभी ने धर्म के नाम पर प्रचलित आडंबरों का विरोध व खंडन किया है। आज लोगों ने अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए भले ही उनके मंदिर बना कर उनकी मूर्तियाँ स्थापित कर दी हों और उनकी पूजा भी करने लगे हों लेकिन कबीर जैसे संत ने तो मूर्तिपूजा का स्पश्ट रूप से खंडन किया है। कबीर कहते हैं :

पाहन पूजे हरि मिले तो मैं पूजूँ पहाड़,<br>
उससे तो चक्की भली पीस खाय संसार।

अर्थात् यदि पत्थर या पत्थर की मूर्ति पूजने से भगवान मिलते हैं तो क्यों न मैं पहाड़ की ही पूजा करूँ? उससे (पत्थर की मूर्ति से) तो पत्थर से बनी आटा पीसने की चक्की अच्छी या महत्त्वपूर्ण है जिससे सारा संसार आटा पीस कर अपनी भूख मिटाता है। बड़े–बड़े षहरों और महानगरों के उपासना–गृहों के तो क्या कहने! आजकल तो कई मंदिर ऐसे भी बन गए हैं जहाँ श्रद्धालुओं का नहीं दर्षनार्थियों का ताँता लगा रहता है। वे पर्यटन स्थल के रूप में ज़्यादा पहचाने जाने लगे हैं।

आज हम न केवल विषाल व भव्य पूजा स्थलों का निर्माण कर रहे हैं अपितु धर्म व भक्ति के नाम पर प्रदूशण में भी खूब वृद्धि कर रहे हैं। जुलूस व षोभायात्राएँ निकाल कर आम नागरिकों के जीवन में मुष्किलें बढ़ा रहे हैं। छोटा या बड़ा कोई भी आयोजन क्यों न हो लाउडस्पीकर का इस्तेमाल आम हो गया है। कीर्तन व जागरण आदि के नाम पर इतना ध्वनि प्रदूशण होता है कि कुछ मत पूछिए। सभी धर्मों के धर्मस्थलों से सुबह–सुबह ही तेज़ आवाज़ में धार्मिकता बरसनी प्रारंभ हो जाती है जिससे बच्चों, बूढ़ों, बीमारों व रात की षिफ़्ट में काम करने वाले लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। आम नागरिक के जीवन को कश्टप्रद बनाने वाली क्रियाएँ धर्म नहीं हो सकतीं। ईंट–पत्थरों से निर्मित मंदिर–मस्जिद की उपयोगिता और धर्म के नाम पर षोर–षराबे की प्रवृत्ति का खंडन करते हुए कबीर ने तो स्पश्ट षब्दों में कहा है :

कांकर–पाथर जोड़ि के, मस्जिद लई चुनाय,<br>
ता चढ़ि मुल्ला बांग दे, बहरा भया खुदाय।

प्रष्न उठता है कि आख़िर पूजा–स्थल और पूजा–पाठ के नाम पर षोर–षराबे की आवष्यकता ही क्या है? मंदिर को ही लीजिए। मंदिर एक पावन स्थल माना जाता है लेकिन यह श्रद्धालुओं अथवा आगंतुकों की भावना ही है जो किसी पूजा–स्थल अथवा इबादतगाह को पवित्रता का दर्जा देती है। यदि भावना षुद्ध–सात्त्विक है तो ईंट–पत्थरों से बने निर्जीव ढाँचे व लाउडस्पीकर लगाकर षोर करने की बिलकुल आवष्यकता नहीं है। वास्तव में आज भोली–भाली जनता को धर्मांध बनाकर अपना उल्लू सीधा किया जा रहा है। जो भी हो आज अधिकांष धर्म स्थल व्यक्ति और समाज के लिए आध्यात्मिक उन्नति के साधन व केंद्र न रह कर कुछ लोगों के लिए मोटी कमाई के स्रोत बन गए हैं। हमें धर्म के वास्तविक स्वरूप को समझकर बाह्याडंबर से बचने का प्रयास करना चाहिए तभी हम सही मायनों में धर्म का पालन कर सकेंगे।

# धागा

सीताराम गुप्ता

पिछले रक्षाबंधन के उपरांत पूरे एक साल तक मैं जिन हालातों से गुज़रा था सभी जानते हैं। करुणा भी मेरे हालात से बेख़बर नहीं थी। मदद तो दूर साल भर तक उसने न तो कभी हमारे घर आने की ज़रूरत समझी और न ही कुछ पूछताछ करने की। क्या साल में एक दिन भाई की कलाई पर एक धागा लपेट देने मात्रा से भाई–बहन के इस पवित्र और महत्त्वपूर्ण रिश्ते को सँभालकर रखा जा सकता है? मैंने फ़ैसला कर लिया कि करुणा और उसके परिवार के सदस्यों से कोई संबंध नहीं रखूँगा। बेशक करुणा मेरी इकलौती बहन है और मैं उसका इकलौता भाई लेकिन दिल पर पत्थर रखकर मैंने ये निर्णय ले लिया कि भविष्य में कभी भी उससे राखी नहीं बँधवाऊँगा। जब दिलों में ही प्रेम नहीं तो प्रेम का नाटक करने का क्या औचित्य हो सकता है, किसी भी तरह ये बात मेरी समझ में नहीं आ रही थी। मैंने अपने निर्णय से घर के सभी सदस्यों को अवगत करा दिया था। अगले रक्षाबंधन पर अलबत्ता तो करुणा आएगी ही नहीं और अगर आएगी भी तो मैं किसी भी क़ीमत पर उससे राखी नहीं बँधवाऊँगा।

रक्षाबंधन निकट ही था। घर में बेचैनी व्याप्त हो गई। माँ, पत्नी और बच्चे सभी मेरे इस निर्णय से बेहद दुखी नज़र आ रहे थे। आख़िर रक्षाबंधन का दिन भी आ ही पहुँचा। वैसे तो करुणा प्रायः दोपहर के बाद ही आती थी लेकिन आज वो सुबह–सुबह ही आ पहुँची। हम चाय पी रहे थे। चाय–नाश्ता छोड़कर बच्चे अपनी बुआ से लिपट गए। उनकी बातें ही ख़त्म नहीं हो रही थीं। करुणा ने बच्चों से कहा कि तुमसे बाद में निपटूँगी पहले मुझे अपने भाई प्रदीप से निपटने दो। वह किचन में गई और वहाँ से थाली लेकर उसमें राखी, मिठाइयाँ व अन्य ज़रूरी सामान रखकर सीधे मेरे पास पहुँची। जैसे ही उसने थाली मेज़ पर रखकर राखी उठाई मैंने चुपचाप अपनी कलाई उसकी तरफ बढ़ा दी। मेरा पाशाण–हृदय मेरा साथ छोड़ चुका था। करुणा और उसके परिवार के सभी सदस्यों के लिए आशीर्वादों की वर्षा हो रही थी। पवित्र भावों से निर्मित एक सूक्ष्म–सा धागा रिश्तों को बख़ूबी सँभालने में सक्षम था।

ए.डी.–106–सी, पीतमपुरा,
दिल्ली–110034
फोन नं. 09555622323

# ऋग्वेद उद्यान से चुने पुष्प

डा ओम प्रकाश सेटिया

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है स वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है स अतः इसी सदर्भ में मै आप को आप की सुप्रिसद्ध मासिक पत्रिका "VEDIC THOUGHTS" में प्रकाशित करने हेतु निम्नलिखित ऋग्वेदाह उद्यान से चुने पुष्प प्रेषित कर रहा हूँ स कृपया आप इन्हें लोक कल्याणार्थ प्रकाशित कर कृतार्थ करें स

अग्निमीड़े पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् स होतारम् रत्नधातमम् सस ऋव १६१६१

भावार्थ दृ मैं ज्ञानस्वरूप , पूर्व से ही जगत् को धारण करने वाले , यज्ञ के प्रकाशक , सदैव पूजनीय , सब अभीष्ट पदार्थों के दाता और सब सुन्दर पदार्थों के स्वामी प्रभु की स्तुति करता हूं स ऋव १६१६१

स नः पितेव सूनवैग्ने सूपायनो भव स सचस्वा नः स्वस्तये सस ऋव १६१६६

भावार्थ दृ सब मनुष्यों को उत्तम प्रयत्न और ईश्वर की प्रार्थना इस प्रकार से करनी चाहिए कि दृ हे भगवन् ! जैसे पिता अपने पुत्रों को अच्छी प्रकार पालन करके और उत्तम उत्तम शिक्षा देकर उनको शुभ गुण और श्रेष्ठ कर्म करने योग्य बना देता है , वैसे ही आप हम लोगों को शुभ गुणों और शुभ कर्मों में युक्त सदैव कीजिए सस ऋव १६१६६

ओमासश्चर्षणीधृतो विश्वे देवास आ गत स दाश्वांसो दाशुषः सुतम् सस ऋव १६३६७

भावार्थ दृ ईश्वर विद्वानों को आज्ञा देता है कि दृ तुम लोग एक जगह पाठशाला में अथवा इधर उधर देशदेशान्तरों में भ्रमते हुए अज्ञानी पुरुषों को विद्यारुपी ज्ञान देके विद्वान किया करो , कि जिससे सब मनुष्य लोग विद्या धर्म और श्रेष्ठ शिक्षायुक्त होके अच्छे अच्छे कर्मों से युक्त होकर सदा सुखी रहैं स ऋव १६३६७

एमाशुमाशवे भर यज्ञश्रियं नृमादनम् स पतयन्मंदयत्सखम् सस ऋव १६४६७

भावार्थ दृ ईश्वर पुरुषार्थी मनुष्य पर कृपा करता है आलस करनेवाले पर नहीं , क्योंकि जब तक मनुष्य ठीक ठीक पुरुषार्थ नहीं करता तब तक ईश्वर की कृपा और अपने किए हुए कर्मों से प्राप्त हुए पदार्थों की रक्षा भी करने में समर्थ कभी नहीं हो सकता स इसलिए मौषयों को पुरुषार्थी हो कर ही ईश्वर की कृपा के भागी होना चाहिए सस ऋव १६४६७

सुत्पाव्ने सुता इमे शुचयो यन्ति वीतये स सोमासो दध्याशिरः सस ऋव १६५६५

भावार्थ – जब ईश्वर ने सब जीवों पर कृपा करके उनके कर्मों के अनुसार यथायोग्य फल देने के लिये सब कार्य्यरूप जगत् को रचा और पवित्र किया है , तथा पवित्र करने करानेवाले सूर्य्य और पवन को रचा है , उसी हेतु से सब जड़ पदार्थ वा जीव पवित्र होते हैं स परन्तु जो मनुष्य पवित्र गुण कर्मों के ग्रहण से पुरुषार्थी होकर संसारी पदार्थों से यथावत् उपयोग लेते तथा सब जीवों को उनके उपयोगी कराते हैं , वे ही मनुष्य पवित्र और सुखी होते हैं सस ऋव १६५६५

**D.Sc. (Medicina Alternativa), RMP (Homoeopathy)**
House No. 464, Sector 32-A, Chandigarh-160030, India
Mobile no : +919872811464
Land line no. : 0172-2660466

# *Degree is good and one must get but is not everything*

Educational degrees can momentary impress you but in real life these degrees have a very little bearing.

Make your young children read it

Today when both the partners are earning, our middle class has acquired deep pockets and they do not mind spending liberally & exorbitantly on the education of their children. And in many cases even when child does not have good marks to get into an institute of repute.without

Ramachandran, 45 from Narsapur, Andhra Pradesh shares his inspiring story.

"I belonged to a lower middle class farmer family. It was hard to work and study at the time. But I was never disappointed because I knew that my present would never limit my future.

"I joined a technical institute after my SSLC and did my technical trade at Govt ITI, Thiruvannamalai so I could become a first in my trade.

"After completing my trade in 1992, I joined as a trainee at Ennore, Ashok Leyland Ltd.

"My monthly stipend was fixed at Rs 300 with food coupon.

"At the end of the month, I received it in a white envelope.

"Inside it there were six new notes of Rs 50. I cut the corner of the envelope so I could count and verify the same.

"I kept the first envelope inside the book without folding it. I counted it many times; I couldn't sleep.

"The following day after completing my duty, I went to my home town so I could give it to my parents and seek their blessings. I wanted to give it to them intact.

"They blessed that they'd like to see me as an entrepreneur so I could employ people and help society in the future.

"We spent Rs 250 to buy a secondhand bicycle for my father.

"A year later, I joined VVK Engineering, a small scale firm in Manali for a salary of Rs 2,000 per month.

"I worked there for 2 years before moving to an oil and gas company in Baroda. In 1996, my salary was Rs 3,500 per month.

"I was promoted to workshop manger after pursing management studies. I worked there for 16 years and learned a lot about the industry.

"In April 2012, I moved to Andhra Pradesh and started my own manufacturing, fabrication and repairing service firm with state-of-the-art facility.

"I started with a staff of four people; today, I have fifteen direct employees and thirty indirect employees working with me."

# विद्यार्थियों में बढ़ता तनाव

अनुराग पाठक

एक बड़े शायर का शेर है
हर लफ्ज से चिंगारियां निकलती हैं,
कलेजा चाहिए अखबार देखने के लिए।

आजकल प्रगति और तनाव पर्यायवाची बनते जा रहे हैं। भले ही ये साहित्यिक हिंदी में पर्यायवाची न हों, लेकिन व्यावहारिक जीवन में जरूर पर्याय–वाची हैं। बहुत अटपटा लगता है कि आज जो जितना आधुनिक है, भौतिक सुख के साधन हैं, जितना धनी है, वो उतना ही अधिक तनाव में है। हम साधन और धन के चक्कर में साध्य को प्राप्त कर ही नहीं पाते।

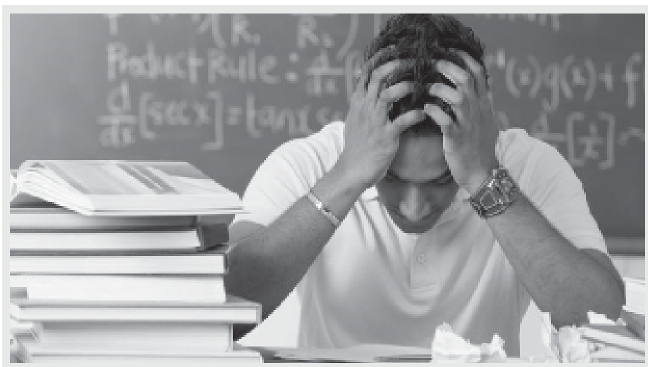

जब व्यक्ति दो जून की कमाने की पहली बार सोचता है, तो उसे लगता है कि बस पेट भर, तो समझो जन्नत है और हमें कुछ नहीं चाहिए। लेकिन रोटी से लेकर कार तक का सफर तय करने के बाद भी उसे सूकून नहीं है, आपाधापी उतनी ही आज भी है जितनी कि कल दो रोटी के लिए थी।दो रोटी की व्यवस्था की जाये।

जो लालसा आपको बड़ा मनुष्य बनाती है, उसे छोड़कर सारा ध्यान इस ओर दिया जा रहा है

साहित्य, अध्यात्म और दर्शन बाद की बात हैं, पहले दो रोटी की व्यवस्था की जाये।

शिक्षा एक बेहतर मनुष्य बनाने की यात्रा से लेकर रोटी तक गयी, बात रोटी तक भी ठीक थी कि लेकिन ग्लैमर और आधुनिकीकरण से इंसान का ध्यान सुख के साधन जुटाने में ही बीत जाता है और वह इस सुख आनन्द नहीं ले पाता है। ग्लैमरपूर्ण जीवन जीने के लिए शिक्षा व्यवस्था ने जीवन को ही खतरे में डाल दिया है। जो शिक्षा पहले जीवन सुलझाने के लिए दी जाती थी, कि जिया कैसे जाए, अब वही जीवन को उलझा रही है। अब तो यह भी माना जाने लगा है कि जो जितना ज्यादा पढ़ा– लिखा होगा, वह उतना ही ज्यादा गम्भीर दिखेगा।

यही तनाव का सबसे बड़ा कारण भी है कि आप कॉलेज में एडमिशन लेने से पहले जानने की
कोशिश जरूर करते हैं कि इस कॉलेज का रिकॉर्ड क्या है, प्लेसमेंट के लिए कैसी कम्पनियां आती हैं, पैकेज क्या देती हैं। इतना सारा रायता तो एडमिशन

लेने के पहले ही फैलाया जाता है, तो सोचकर देखिए जो इतने महत्वकांक्षी होकर, घर वालों की उम्मीदें और सपने लेकर, सब कुछ छोड़कर, अगले कुछ सालों के लिए अपने आपकी आहुति देने जाता है, और कुछ समय बीतने के बाद एहसास होता है कि सपने तो पूरे हुए नहीं, पैकेज जो सोचा था वो मिला नहीं, न्यायाधीश बनना था, बना ही नहीं, तो फिर तनाव जैसी चीजें जीवन का हिस्सा बन जाती हैं और कई बार वे आत्महत्या और डिप्रेशन 1⁄4अवसाद1⁄2 के रूप में सामने आती हैं।

क्या ऐसा नहीं हो सकता है कि लालसा की परंपरा को आगे बढ़ाया और अपनाया जाए? शिक्षा में सफलता के मानक को दुबारा से सेट किया जाये। तनावयुक्त शिक्षा व्यवस्था, जो किसी भी व्यक्ति की कार्यक्षमता को कम करती है, क्या उसकी जगह कुछ और नहीं सोचा जा सकता है? जिन्हें बड़े सफलताएं मिल भी गयी क्या वो खुश हैं? अगर नहीं तो ऐसी शिक्षा व्यवस्था किस काम की जो सिर्फ हस्ताक्षर करना सिखाती हो?

अकबर इलाहाबादी भी हाई कोर्ट में न्यायाधीश थे, उन्होंने लिखा है–
क्या कहें साहब कि क्या, कारे नुमायां कर गए बीए किया, बाबू बने, पेंशन मिली और मर गय बेहतर यही होगा कि अंध शिक्षा और विकास के अन्तर को समझा जाए। एकोऽहं बहुस्यामः की परंपरा बनी रहे और मनुष्यता भी जिंदा रहे विकास भी रहे, लेकिन मनुष्यता के बदले में आधुनिक और आर्थिक विकास हो यह स्वीकार्य नहीं है।

✪✫✪


# M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

( An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins “ VEDIC THOUGHTS” in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

## कैसा होना चाहिये बच्चों से हमारा प्यार

स्वामी विवेकानन्द ने कहा है कि बच्चो के प्रति वही भावना रखें जो कि एक धाय (Mid-wife) की बच्चे के प्रति होती है। वह तुम्हारे बच्चे को गोाद में लेती है, उसे खिलाती है और उसे इस प्रकार प्यार करती है, मानो वह उसी का बच्चा हो।
पर ज्यों ही तुम उसे काम से अलग कर देते हो, त्यों ही वह अपना बोरा–बिस्तर समेट तुरन्त घर छोड़ने को तैयार हो जाती है। उन बच्चों के प्रति उसका जो इतना प्रेम था, उसे वह बिलकुल भूल जाती हैं। एक साधारण धाय को तुम्हारें बच्चों को छोड़कर दूसरे के बच्चों को लेने में तनिक भी दुखः न होगा। तुम भी अपने बच्चों के प्रति वही भाव धारण करो। यदि तुम्हारा ईश्वर में विश्वास है, तो विश्वास करो कि ये सब चीजें, जिन्हें तुम अपना समझते हो, वास्तव में ईश्वर की हैं।

**SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA**

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab
Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465
Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

# निन्दा-निषेध

मनुष्य को जीवन में कभी ना तो किसी की निन्दा करनी चाहिए और ना ही किसी की निन्दा सुननी चाहिये। दूसरों के अवगुण देखने के स्थान पर औरों के गुण और अपनी सदा गलतियां देखने में ही मनुष्य का कल्याण है । हंस सदा मोती चुनता है और उसके ठीक विपरीत कौआ सदा कूड़े को खाता है । यानि हमें भी जीवन में सदैव हंस की भांति औरों के गुण देखकर उन्हें धरण करने का प्रयास करना चाहिए । दूसरों के अवगुण देखकर उनकी निन्दा करके तो हम भी कौए के समान हो जायेंगे । वैसे भी मनुष्य जब किसी की गलतियां निकालकर अंगुली उसकी ओर उठाता है तो

उसके स्वयं के हाथ के नीचे छिपी उसकी अपनी ही शेष तीन अंगुलियां उसके अपनी ओर मुड़कर आत्मनिरीक्षण करने की चेतावनी देती है । जैसे कह रही हों दूसरों की गलतियां, अवगुण, दोष देखने वाले पहले तू स्वयं अपनी गलतियां दोष सुधर ले । यदि हम केवल दूसरों के अवगुण देखकर निन्दा ही करते रहेंगे तो निश्चित रूप से उन दोषों को खुद धरण कर लेंगे और इसके विपरीत यदि हम गुण ग्राहय बनकर औरों के गुण देखेंगे तो हंस बन जायेंगे।

त्राफग्वेद में मा निन्दत । त्राफ. 4/5/2 कहकर वेद भगवान ने आदेश दिया निन्दा मत करो । चाणक्य ने निन्दा करने वाले को महाचंडाल बताया है और कहा कि निन्दा मनुष्य की जीते जी सारी दुर्गतियां कर देती है । अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि निन्दा कहते किसे हैं । क्रान्तदर्शी महर्षि देव दयानन्द ने निन्दा की परिभाषा दी है ''जो मिथ्या ज्ञान, मिथ्या भाषण झूठा आग्रह जिससे उसके गुण छोड़कर उसके स्थान पर अवगुण लगाना निन्दा कहलाती है ।''

यह ठीक है कि हम दूसरों की निन्दा ना करे ना सुने लेकिन इसके विपरीत यदि कोई हमारी निन्दा करता है तो उसे ध्यानपूर्वक धैर्य से सुनें और निन्दक का ध्न्यवाद करे जिसने हमें हमारी गलतियां दोष बताकर दूर करने का अवसर प्रदान किया । महात्मा कबीर ने तो अपनी निन्दा करने वाले के लिए यहां तक कहा –

निन्दक नियरे राखिये , आंगन कुटी छवाय ।
बिन पानी साबुन बिना , निर्मल करे सुभाय ।।

यदि मनुष्य अपने निंदक को अपने पास बैठाकर धैर्यपूर्वक अपनी निन्दा सुनने का सामर्थ्य

रखता है तो वह अपने दोष दूर कर सकता है । यदि हम अपनी निन्दा नहीं सुन सकते तो हमें अपने अवगुणों का ज्ञान नहीं हो पाता और हम उन्हें दूर नहीं कर सकते । वैसे भी एक स्वाभाविक नियम है जैसी क्रिया वैसी प्रतिक्रिया । यदि हम औरों को गालियां देंगे तो लोग भी हमें प्रत्युत्तर में गालियां ही देंगे । मनुष्य को मधुमक्खी की भांति होना चाहिए जो पफूलों पर बैठकर उनका मीठा रस लेती है और माधुर्य मधु का निर्माण करती हैं । ठीक उसी प्रकार यदि हम दूसरों के गुण देखकर ग्रहण करते रहेंगे तो हमारा हृदय निर्मल और पवित्रा हो जायेगा । हमें जीवन में यह संकल्प लेना होगा –

औरों के हम दोष न देखें , अपने दोष विचारें ।
निन्दा करें न कभी किसी की , यही एक गुण धरें ।।

अन्त में निष्कर्ष निकलता है कि यदि हम दूसरों के अवगुण दोष देखकर निन्दा ही करते रहते हैं तो उन दोषों को स्वयं भी ग्रहण करके दोषी बन सकते हैं और साथ ही स्वयं भी प्रत्युत्तर में निन्दा के पात्रा बनते हैं । इसके विपरीत यदि हम दूसरों के गुण देखते हैं तो उनको धरण करके गुणी बनकर मन को पवित्रा एवं निर्मल कर लेते हैं । हमें अपनी निंदा को बड़े धैर्य से सुनना चाहिए ताकि अपने दोषों को जानकर उन्हें दूर कर सकें और इसके लिए हमें अपने निन्दक का ध्न्यवाद करना चाहिये । जिस प्रकार ठोस पर्वत आंधि तूपफान में विचलित नहीं होता अडिग रहता है उसी प्रकार हमें भी प्रशंसा या निन्दा सुनकर समभाव रहना चाहिये । जिस मनुष्य में अपनी निन्दा धैर्यपूर्वक सुनने की सहनशक्ति आ जाती है वह अत्यंत वीर विजयी होता है ।

नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

✪☆✪


# WANTED A BRIDE

**COMPATIBLE MATCH FOR SOOD BANTA BOY**

D.O.B 27 MAY 1993, HEIGHT 5"10", FAIR, HANDSOME,

**B TECH (PU)- MBA FINAL YEAR (NARSEE MUNJEE MUMBAI),**

**PLACED IN PIDILITE INDUSTRIES LTD.**

WITH A HANDSOME PACKAGE. PARENTS IN

**HOSPITALITY BUSINESS AND YOUNGER BROTHER LAWYER.**

**CONTACT : 7018262040, 9418282362**

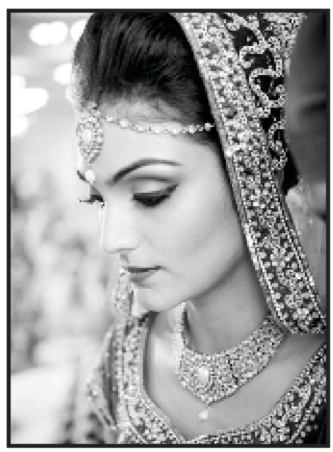

# हम अपने आप को वह न दिखायें जो हम नहीं है

आज हम ऐसे समय से गुजर रहें हैं जब कि जब हम अपनी वेषभूशा और षारिरिक बनावट के लिये बहुत पैसा खर्चते हैं और बहुत समय देते है। कोषिष यही होती है कि हम किसी खास मौके, अवसर, नौकरी के लिये या फिर सम्बन्ध बनाने के लिये अपने आप को ऐसा प्रस्तुत करें जो कि हम नहीं होते। कई बार यह बहुत नुकसान दायक भी होता है। खास कर विवाह षादियों के मामले में। क्योंकि ऐसे सम्बन्धों में आपसी विष्वास बहुत महत्व रखता है। बहुत से षादी रिष्ते इस लिये ही टूट रहें हैं क्योंकि दोनो पक्षों का आरोप यह होता था कि हमें असलियत का पता ही नहीं लगा। पता लगे भी कैसे क्योकि देख दिखाई से लेकर षादी तक पांच सितारा होटलों में ही सब कुछ होता है। आगे घरों में ही सब कुछ होता था और दोनों पक्षों को जानने वाला व्यक्ति बीच में होता था तो बहुत कुछ पता भी लग जाता है। असली बात यह है कि झूट कहें या फिर दिखावा , अधिक दिन नहीं छुपता, एक न एक दिन सामने आ ही जाता है। और जब सामने आता है तो दरार पडती है, और यह दरार कई बार घंभीर रूप ले लेती है। फिर वही होता है जो कि यह पंचतन्त्र की कहानी बताती है। दुख की बात यह है कि आज हमें मिडिया द्वारा परोसा ही यह सब कुछ जाता है। एक हफते में रंग सांवले से गोरा। एक हफते में 15 कीलो बजन कम करो। ऐसा गोरा किया रंग कुछ दिन तक ही रहता है और बजन फिर हुछ दिनों में वहीं पहुंच जाता है।

एक गीदड़ अपने गांव से जब घूमता हुआ दूसरे गांव में गया तो वहां के कुते उसके पीछे पड़ गये। गीदड़ भागता हुआ, एक धोबी के नील से भरे टब में गिर गया । जब बाहर आया तो उसका रंग नीला हो गया था। जब कुतों ने नीले रंग का पषु देखा तो डर कर भाग गये, क्योंकि उन्होने पहले कभी ऐसे रंग का पषु नहीं देखा था। जब गीदड़ ने यह सब देखा तो दिल में बहुत खुष हुआ और उसने सोचा मुझे इस का फायदा उठाना चाहिये। उसने सभी पषुओं की सभा बुलाई और कहा कि उसे भगवान ने तुम सब का राजा बना कर भेजा है ताकि आप सभी लोग लड़ना बन्द करके मेरे कहे अनुसार चलें।

सभी पषुओं ने उसे अपना राजा मान लिया। गीदड़ का जीवन बहुत अच्छा चल रहा था। एक दिन जब गीदडों का झुंड वहां से गुजर रहा था वह जोर जोर से अपस में लड़ रहे थे। राजा गीदड़ भूल गया कि वह तो नये रूप में रह रहा था और गीदड़ों की ही बोली मे चिल्लाया। षुओं को असलियत का पता लगने में समय न लगा और उन्होने गीदड़ को पकडत्र कर मार डाला। यही हाल अक्सर होता है जब हम अपनी असलियत को छुपा कर रहते है।

इस का सब से बड़ा नुकसान यह होता है कि समाज में क्ष्यक्ति की साख गिर जाती है। हम अपने आप को वह न दिखायें जो हम नहीं है

# Dharm Shiksha धर्म शिक्षा

मनुन्य केवल संकल्प कर सकता है, संकल्प पूरा करने के लिये परिश्रम कर सकता है परन्तु संकल्प पूरा तभी होता है जब ईश्वर की कृपा हो। इसलिये जब भी आपका संकल्प पूरा हो तो परमात्मा का धन्याबाद करना न भूलें। जब आप ईश्वर का धन्याबाद करतें हैं तो आप कृतज्ञता का पुण्य कमाते है, और यदि आप धन्याबाद नहीं करतें हैं तो यह कृतघन्ता अर्थात पाप होगा।

## रागी कौन है और वैरागी कौन है ?

जब आप यह मान कर चालते हैं कि जो भी वस्तुयें आप के पास है वे ईश्वर ने आपको प्रयोग के लिये दी हैं और उन्हें छोड़ने में, किसी दूसरे को देने में आप को दुख नहीं होता तो आप वैरागी की श्रेणी में आ जाते हैं, परत्ते यदि आप ईश्वर की इत व्सतुओं को आपना मानकर त्यागने से या छोड़ने से घवराते हैं तो आप रागी हैं। राग दुख का कारण है जब कि वैराग यदि सही माने में पैदा हो –––इदन्‍न्मम की भावना से पैदा हो तो सुख का खजाना है।

## ज्ञान का प्रसार आर्यों का कर्तव्य है

मनुष्य ज्ञानी होकर जो सुख लाभ प्राप्त करता है, वह उसे अपने आचार्यों व अध्ययन आदि पुरुषार्थ से प्राप्त होता है। उसका कर्तव्य है कि वह भी समाज के सभी लोगों को जो वेदों के सत्यज्ञान का अमृतपान कराये। ऋषि दयानन्द ने अपने इस कर्तव्य को जानकर ऐसा ही किया। इसी से देश के लोग लाभान्वित होकर विभिन्न क्षेत्रों में आगे बढ़े हैं। देश को अविद्या के अन्धकार से निकालकर उसे ज्ञान व विज्ञान से आप्लावित एवं सराबोर करने का पुरुषार्थ ऋषि दयानन्द जी ने किया था। उनका प्रयास अभी लक्ष्य को प्राप्त नहीं हुआ है। ऋषि दयानन्द पोषित एवं प्रचारित लक्ष्य 'सुखी मनुष्य जीवन एवं मोक्ष प्राप्ति' क्योंकि सर्वतोमहान है, अतः इसे प्राप्त करने में युगों लग सकते हैं। इसकी सफलता देश के लोगों के द्वारा वैदिक विचारधारा को अपनाने पर ही हो सकती है। यही कारण था कि ऋषि दयानन्द ने इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिये अपने सर्व सुखों का त्याग कर दिया था और आजीवन देश, समाज व संसार से अविद्या व अन्धविश्वासों को दूर करने के लक्ष्य पर आगे बढ़ते रहे। वेदों का प्रचार करते हुए उन्होंने एक महान कार्य यह भी किया था कि उन्होंने संसार के सभी प्रमुख मतों की अविद्या को भी हमारे सामने रखा जिससे कि हम इन मतों के चक्रव्यूह, चक्रवात व भंवर में न फंसे। हम यह समझते हैं कि जो लोग आर्यसमाज व वैदिक धर्म के अनुयायी हैं वह वेदेतर अविद्यायुक्त मतों के भंवर जाल से बचे हुए हैं। वह निराकार व सर्वव्यापक परमात्मा की स्तुति, प्रार्थना व उपासना सहित उसका अपनी आत्मा में ध्यान व खोज करते हैं।

# संगठन में शक्ति

एक दिन एक राजा ने मंत्री से कहा, "मेरा राज्य के योग्य प्रजाजनों को सम्मानित करने का विचार है, आप मुझे बतायें कि उनका चुनाव कैसे हो?" मंत्री ने कुछ सोचकर उत्तर दिया ,"राजन, आपके राज्य में योग्य जन तो बहुत हैं, मगर उनमें एकता का सर्वथा आभाव हैं। वे अपनी शक्ति एक दूसरे की प्रगति में रोड़ा अटकाने में व्यय कर देतेहैं।" राजा को मंत्री की बात बहुत अटपटी लगी। उन्होंने मंत्री से सभी योग्य पुरुषों की परीक्षा लेकर अपना तर्क सिद्ध करने का आदेश दिया।

मंत्री ने अगले दिन राज्य के 20 सबसे योग्य व्यक्तियों को एक मैदान में बुलाया। एक 8 फुट गहरा एवं 8 फुट लम्बा–चौड़ा गड्ढा मंत्री ने खुदवाया और सभी को गड्ढे में उतार दिया। मंत्री ने राजा कि उपस्थिति में सभी 20 योग्य व्यक्तियों के समक्ष घोषणा की– "जो भी आप 20 में से इस गड्ढ़े से सबसे पहले निकलकर आयेगा। राजा जी उसे राज्य का चौथाई हिस्सा पुरस्कार के रूप में देंगे।"

मंत्री की घोषणा सुनकर सभी गड्ढे से बाहर निकलने का प्रयास करने लगे। जो भी सबसे आगे निकलता बाकि सब उसे पीछे खींच लेते। इस प्रकार सभी घंटों तक लगे रहे, मगर अंत में सभी थककर
बेहोश हो गये। सफलता किसी को नहीं मिली।

राजा को बड़ा अचरज हुआ। मंत्री ने कहा, "राजन! अगर इन सभी में एकता होती, परस्पर ईर्ष्या और द्वेष न होता, तो ये एक दूसरे का सहयोग कर किसी एक को विजेता बना सकते थे। मगर आपसी
तालमेल की कमी के चलते सभी प्रतियोगिता में हार गये।"

भारत देश की पिछले 5000 वर्षों में जो दुर्गति हुई है, उसका कारण भी यही एकता की कमी और परस्पर ईर्ष्या और द्वेष का होना हैं। महाभारत के काल में पांडव और कौरव के मध्य एकता की कमी
के चलते ही महायुद्ध हुआ था, जिसके परिणाम– स्वरूप देश शक्तिहीन हो गया। कालांतर में विदेशी हमलावरों के समक्ष स्वदेशी राजा योग्य एवं अधिकशक्तिशाली होते हुए भी परस्पर ईर्ष्या और द्वेष के1
ऋगवेद का अंतिम सूक्त संगठन सूक्त

ओण्ण्म सगंच्छध्वं सं वदध्वम् सं वो मनांसि
जानतामं। देवा भागं यथा पूर्वे संजानानां उपासते।।
इस मंत्र का अर्थ है– हे स्तोताओ! तुम परस्पर एक विचार से मिलकर रहो, परस्पर मिलकर प्रेम से वार्तालाप करो। तुम लोगों का मन समान होकर ज्ञान प्राप्त करे। जिस प्रकार पूर्व में लोग एक मत
होकर ज्ञान संपादन करते हुए सेवनीय ईश्वर की उत्तम प्रकार से उपासना करते हैं, उसी प्रकार तुम भी एकमत होकर अपना कार्य करो। और धनादि संपन्नता ग्रहण करो।

वेद परस्पर मिलकर विचार करने, प्रेम से वार्तालाप करने, समान मन करने, ज्ञान प्राप्त करते हुए ईश्वर की उपासना करने का संदेश दे रहे हैं जिससे मानव जाति समुचित प्रगति करे। अगर भारत देश वासियों ने वेद के "संगठन मंत्र" का पालन किया होता, तो देश कभी विदेशी आक्रान्ताओं का गुलाम नहीं बनता और सदा
विश्वगुरु बना रहता।

रजि. नं. : 4262/12 ।। ओ३म् ।। फोन : 94170-44481, 95010-84671

# महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगड़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

**Arya Samaj Sector 18 Members Giving Langar To Children Of Maharishi Dayanand Bal Ashram.**

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह धार्मिक साथी 50 प्रति माह
आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है् :-

**A/c No. : 32434144307**
**Bank : SBI**
**IFSC Code : SBIN0001828**

**All donations to this organization are exempted under section 80G**

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

## निमार्ण के 63 वर्ष

# गैस ऐसीडिटी
# शिमला का मशहूर
# कामधेनु जल

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

### (एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
### मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489,Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552,
Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

**Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.**

**शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047**

**0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in**

# जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

**Indu Soni**

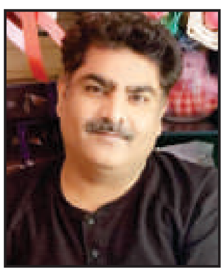

**Rajesh Bhatia**

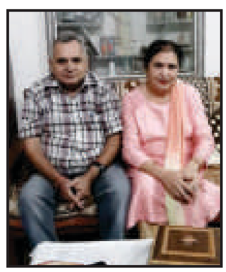

**Usha kakkar**

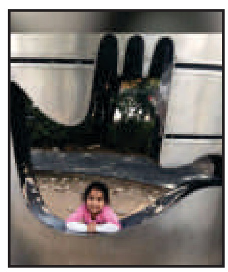

**Omya Puri**

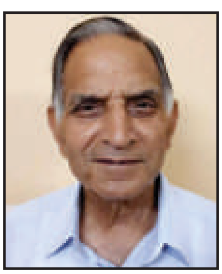

**Vijay Mehan**

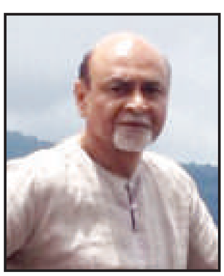

**Yash**

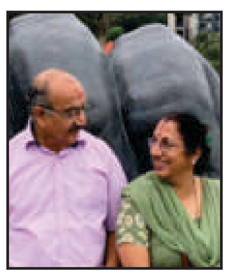

**Sujata Maalhotra**

**Navneet**

RNI NO. CHABIL/2012/47744 POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2018-2021


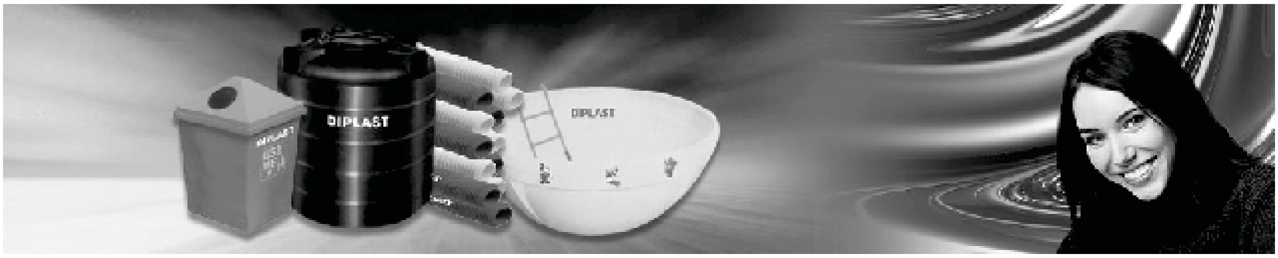

मजबूती में बे–मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years in service

DIPLAST
PLASTICS LIMITED
AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH


# विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

**Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh**
**9217970381 and 0172-2662870**